चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....The Tribune....

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या ....2.... कॉलम ....2-3....

Varsity develops bio-fortified millet

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, NOVEMBER 26

Scientists in the bajra section of the department of genetics and plant breeding in Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) have developed a new bio-fortified variety of millet.

The HHB 311 variety has been notified and released by the Crop Standards, Notification and Approval Central Sub-Committee of the Department of Agriculture and Cooperation in the Union Ministry of Agriculture and Farmers' Welfare.

The variety has been developed by Dr Ramesh Kumar, Dr Dev Vrat, Dr Virendra Malik, Dr MS Dalal, Dr KD Sahrawat, Dr Yogendra Kumar, Dr SK Pahuja, Dr Anil Kumar, Dr LK Chugh, Dr Narendra Singh, Dr Kushal Raj, Dr M Govindaraj and Dr Anand Kanati.

Vice-Chancellor Samar Singh said the variety contained high iron and zinc content at 83 mg and 42 mg per kg, respectively. "The HHB 311 variety has the potential of 18 quintal yield per acre. This variety is resistant to downy mildew and matures in between 75 and 80 days," he said.

Is resistant to downy mildew and matures in between 75 and 80 days

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....Times of India.....

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....1.....

New millet variety developed

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hisar has developed a new bio-fortified variety of millet. The variety has been developed by scientists of the bajra section of the department of genetics and plant breeding, agriculture college. The variety has high iron and zinc content.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक भास्कर........

दिनांक 27.11.2020........पृष्ठ संख्या........4........कॉलम........3-8........

पहल • अब लौह तत्व और जिंक से भरपूर होगा बाजरा, नई किस्म में अनाज और सूखे चारा की मात्रा भी रहेगी अधिक, वीसी ने की सराहना

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311

भास्कर न्यूज | हिसार

मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज और सूखे चारे की अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की है।

इसे कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। एचएयू द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसचित व जारी किया गया है। एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विवि के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

▪ इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिशः अनसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एचएचबी 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन- जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

एचएयू में बाजरे की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के साथ कुलपति प्रोफेसर समर सिंह।

जिन्हें गेहूं की एलर्जी उनके लिए बहुत फायदेमंद

बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। इस किस्म के दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जोकि सिलिअक, स्व. प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी और आंतों की पारगम्यता बीमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है।

बाजरे में मुख्य तत्व

बाजरे में मुख्य रूप से 12.8 % प्रोटीन, 4.8 ग्राम वसा, 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैग्नीशियम -228 मिली ग्राम, फॉस्फोरस-570 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पोटैशियम 390 मिली ग्राम व कॉपर-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाए जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सुजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है।

वैज्ञानिकों ने विवि का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है।"

– प्रो. समर सिंह, कुलपति, एचएयू।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... दैनिक जागरण .....

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....1-6.....

शोध

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचवी 311

अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा, टाइप टू मधुमेह को करेगा कम

जागरण संवाददाता, हिसार: मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएचबी 311 नाम से बाजरे की नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की है। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के विज्ञानियों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डा. रमेश कुमार, डा. देव व्रत, डा. विरेंद्र मलिक, डा. एमएस दलाल, डा. केडी सहरावत, डा. योगेन्द्र कुमार और डा. एसके पाहुजा शामिल रहे। इनके साथ डा. अनिल कुमार, डा. एलके चुघ, डा. नरेंद्र सिंह, डा. कुशल राज व डा. एम. गोविंदराज व डा. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है।

बाजरे की किस्म एचएचबी 311 का फाइल फोटो। ● पीआरओ

इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने बताया कि एचएचबी 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रो. सिंह

विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे।

इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी. 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएचबी. 223, एचएचबी 197, एचएचबी 67 (संशोधित), एचएचबी 226, एचएचबी 234, एचएचबी 272 किस्में भी विकसित की हैं।

जिन्हें गेहूं की एलर्जी उनके लिए बहुत फायदेमंद

बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खादान्न फसल है। इस किस्म के दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो कि सिलिअक, स्व.प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी और आंतों की पारगम्यता बीमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को चिकित्सक द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है।

ये होते हैं बाजरे में मुख्य तत्व

बाजरे में मुख्य रूप से 12.8 प्रतिशत प्रोटीन, 4.8 ग्राम वसा, 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैग्नीशियम -228 मिली ग्राम, फॉस्फोरस-570 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पोटेशियम 390 मिली ग्राम व कॉपर-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। बाजरे के दानों का सेवन सूजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सूजन को कम करते हैं।

हरिभूमि
हिसार-फतेहाबाद-सिरसा भूमि
रोहतक, शुक्रवार 27 नवंबर 2020

बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक

अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा, एचएयू ने बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311 की विकसित

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोटीर्फाइड किस्म विकसित की हैं। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इसको विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देवव्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एसके पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एलके चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है। इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है।

ये होते हैं बाजरे में मुख्य तत्व

बाजरे में मुख्य रूप से 12.8 प्रतिशत प्रोटीन, 4.8 ग्राम वसा, 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम काबोहाईड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैग्नीशियम -228 मिली ग्राम, फॉस्फोरस-570 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पोटैशियम 390 मिली ग्राम व कॉपर-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है।

जिन्हें गेहूं की एलर्जी उनके लिए फायदेमंद

बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खादान्न फसल है। इस किस्म के दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो को सिलिअक, स्व:प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी और आंतों की पारगम्यता बिमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है।

हिसार। बाजरे की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के साथ कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, बाजरे की उन्नत किस्म एचएचबी।

विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया

विश्वविद्यालय के लिए यह गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1-6.....

'अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा'

एच.ए.यू. ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एच.एच.बी. 311

वैज्ञानिकों की टीम के साथ कुलपति प्रो. समर सिंह व बाजरे की उन्नत किस्म एच.एच.बी.-311 का फाइल फोटो।

हिसार, 26 नवम्बर (ब्यूरो): मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे की नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की है। इसे भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डा. रमेश कुमार, डा. देवव्रत, डा. विरेंद्र मलिक, डा. एम.एस. दलाल, डा. के.डी. सहरावत, डा. योगेन्द्र कुमार और डा. एस.के. पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डा. अनिल कुमार, डा. एल.के. चुघ, डा. नरेंद्र सिंह, डा. कुशल राज व डा. एम. गोविंदराज व डा. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है।

18 क्विंटल प्रति एकड़ पैदावार देने की क्षमता

इस किस्म में अन्य के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमश: 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमश: 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधकता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली व जोन-बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

जिन्हें गेहूं की एलर्जी उनके लिए फायदेमंद

बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। इसके दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिअक, स्व प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी और आंतों की पारगम्यता बीमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है। इनकी इन्ही विशेषताओं के कारण इसे न्यूट्री सीरियल नाम दिया गया है।

बाजरे में मुख्य तत्व

बाजरे में मुख्य रूप से 12.8 प्रतिशत प्रोटीन, 4.8 ग्राम वसा, 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैग्नीशियम - 228 मिली ग्राम, फॉस्फोरस-570 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पोटैशियम 390 मिली ग्राम व कॉपर-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाए जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सूजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडैंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सूजन को कम करने में मदद करते हैं।

हर प्रकार की भूमि में ले सकते हैं उत्पादन

बाजरे में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार की तुलना में शुष्क एवं निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण युक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अत: इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहां पर अन्य फसल लेना संभव न हो। उन्नत किस्मों, अच्छी सस्य क्रियाओं व रोग रोधी किस्मों के विकसित होने से बाजरा की पैदावार व उत्पादकता बढ़ रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 27.11.2020....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....1-3.....

हकृवि ने विकसित की लौह तत्व व जिंक से भरपूर बाजरे की एचएचबी-311 किस्म

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के वैज्ञानिकों ने एचएचबी-311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की है।

इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की %फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उपसमिति% द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक लौह तत्व : इस किस्म में लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी-311 किस्म 18 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देवव्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. योगेंद्र कुमार और डॉ. एसके पाहुजा शामिल रहे।

> *विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया*
>
> *यह विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है। प्रदेश सरकार के फसल विविधीकरण को लेकर किए जा रहे प्रयासों में बाजरा अहम भूमिका निभा सकता है।*
>
> ***– प्रोफेसर समर सिंह, कुलपति, हरियाणा कृषि विव, हिसार।***

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**27.11.2020**	——	--

उपलब्धि एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी–311

अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगी बाजरे की फसल

हिसार(सच कहूँ/संदीप सिंहमार)। मोटे अनाज के रुप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए हिसार स्थित हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएचबी–311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोटीर्फाइड किस्म विकसित की हैं। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देवव्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. केडी सहरावत, डॉ.

योगेन्द्र कुमार और डॉ. एसके पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एलके चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशलराज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है। इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएचबी 223, एचएचबी 197, एचएचबी 67 (संशोधित), एचएचबी 226, एचएचबी 234, एचएचबी 272 किस्में भी विकसित की हैं।

हर प्रकार की भूमि में ले सकते हैं उत्पादन

बाजरे में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार की तुलना में शुष्क एवं निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण युक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अतः इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहां पर अन्य फसल लेना संभव न हो। उन्नत किस्मों, अच्छी सस्य क्रियाओं व रोग रोधी किस्मों के विकसित होने से बाजरा की पैदावार व उत्पादकता बढ़ रही है।

विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा। इसके अलावा प्रदेश सरकार के फसल विविधिकरण को लेकर किए जा रहे प्रयासों में बाजरा अहम भूमिका निभा सकता है।

इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एचएचबी–311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

जिन्हें गेहूं की एलर्जी उनके लिए बहुत फायदेमंद

बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। इस किस्म के दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिअक, स्व.प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी और आंतों की पारगम्यता बीमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है। इनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे न्यूट्री सीरियल नाम दिया गया है।

ये होते हैं बाजरे में मुख्य तत्व

बाजरे में मुख्य रुप से 12.8 प्रतिशत प्रोटीन, 4.8 ग्राम वसा, 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम कार्बोहाईड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैग्नीशियम -228 मिली ग्राम, फॉस्फोरस-570 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पोटेशियम 390 मिली ग्राम व कॉपर-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाए जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सूजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सूजन को कम करने में मदद करते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**27.11.2020**	——	--

अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की हैं। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव व्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक,

डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस.के. पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एल.के. चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है।

इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमश: 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमश: 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	**27.11.2020**	——	--

अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की हैं।

इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव व्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस.के. पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एल.के. चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है। इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है।

यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ मौसम के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

जिन्हें गेहूं की एलर्जी उनके लिए बहुत फायदेमंद : बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। इस किस्म के दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिअक, स्व.प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी और आंतों की पारगम्यता बिमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है। इनकी इन्ही विशेषताओं के कारण इसे न्यूट्री सीरियल नाम दिया गया है।

ये होते हैं बाजरे में मुख्य तत्व

बाजरे में मुख्य रूप से 12.8 प्रतिशत प्रोटीन, 4.8 ग्राम वसा, 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैग्नीशियम -228 मिली ग्राम, फॉस्फोरस-570 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पोटैशियम 390 मिली ग्राम व कॉपर-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाए जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सृजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सृजन को कम करने में मदद करते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**26.11.2020**	——	--

अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311

पांच बजे न्यूज

हिसार। मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की हैं। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव व्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एसके पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एलके चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदाबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है।

इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

जिन्हें गेहूं की एलर्जी उनके लिए बहुत फायदेमंद

बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खादान्न फसल है। इस किस्म के दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिअक, स्वप्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी और आंतों की पारगम्यता बीमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है। इनकी इन्ही विशेषताओं के कारण इसे न्यूट्री सीरियल नाम दिया गया है।

ये होते हैं बाजरे में मुख्य तत्व

बाजरे में मुख्य रूप से 12.8 प्रतिशत प्रोटीन, 4.8 ग्राम वसा, 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैग्नीशियम -228 मिली ग्राम, फॉस्फोरस-570 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पोटैशियम 390 मिली ग्राम व कॉपर-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाए जाते है। बाजरे के दानों का सेवन सूजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सूजन को कम करने में मदद करते हैं।

हर प्रकार की भूमि में ले सकते हैं उत्पादन

बाजरे में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार की तुलना में शुष्क एवं निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण युक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अतः इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहां पर अन्य फसल लेना संभव न हो। उन्नत किस्मों, अच्छी सस्य क्रियाओं व रोग रोधी किस्मों के विकसित होने से बाजरा की पैदावार व उत्पादकता बढ़ रही है।

विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा। इसके अलावा प्रदेश सरकार के फसल विविधिकरण को लेकर किए जा रहे प्रयासों में बाजरा अहम भूमिका निभा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**26.11.2020**	——	--

लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी-311

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की हैं। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमश= 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमश= 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

इनका रहा योगदान

इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव व्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस.के. पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एल.के. चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है।

इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**26.11.2020**	——	--

अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की हैं। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव व्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एम. एस. दलाल, डॉ. के. डी. सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस. के. पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एल. के. चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति का भी विशेष सहयोग रहा है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

हिसार। बाजरे की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के साथ कुलपति प्रो. समर सिंह।

इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

*बाजरे की उन्नत किस्म एच.एच.बी. 311 का **फाइल फोटो**।*

विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : कुलपति

विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**26.11.2020**	——	--

अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 26 नवम्बर : मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टीफाइड किस्म विकसित की हैं। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा

विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देवव्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस.के. पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एल.के. चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमश: 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमश: 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है।

विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा। इसके अलावा प्रदेश सरकार के फसल विविधिकरण को लेकर किए जा रहे प्रयासों में बाजरा अहम भूमिका निभा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**26.11.2020**	——	--

हकृवि वैज्ञानिकों ने लौह तत्व एवं जिंक से भरपूर बाजरे की किस्म को किया विकसित

हिसार/26 नवंबर/रिपोर्टर

मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने एचएचबी 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टीफाइड किस्म को विकसित किया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव व्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एसके पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एलके चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है। इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमश: 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमश: 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 311 किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएचबी 223, एचएचबी 197, एचएचबी 67 (संशोधित), एचएचबी 226, एचएचबी 234, एचएचबी 272 किस्में भी विकसित की हैं। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एचएचबी 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है। बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। इस किस्म के दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिअक, स्व.प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी और आंतों की पारगम्यता बिमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है। इनकी इन्ही विशेषताओं के कारण इसे न्यूट्री सीरियल नाम दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 27.11.2020...पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....6-8.....

'किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी'

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों से ऑनलाइन विचार साझा करते वैज्ञानिक।

हिसार, 26 नवम्बर (ब्यूरो): किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने व्यक्त किए।

वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में 3 दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डा. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है, क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

संयोजिका डा. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 27.11.2020.....पृष्ठ संख्या.....3.....कॉलम.....3-4.....

किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. गोदारा

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है।

बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। यह बात सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सहनिदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कही। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुंभ उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर वीरवार को प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। डॉ. गोदारा ने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है, क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की। प्रशिक्षण की संयोजक डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम: दैनिक जागरण

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 6-8

किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डा. एके गोदारा

जागरण संवाददाता, हिसार: किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुंब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

प्रशिक्षण से बाजार की मिलती है जानकारी

किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

खुम्ब के पोषक तत्व बताए

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डा. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....दैनिक भास्कर........

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या ......2...... कॉलम ......8......

एचएयू के प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों से ऑनलाइन रूबरू होते वैज्ञानिक।

व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. गोदारा

हिसार | किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। यह विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने व्यक्त किए। वे एचएयू के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ पर संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन किया जा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**27.11.2020**	——	--

किसी भी व्यवसाय को शुरु करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरुरी : डॉ. गोदारा

■ **खुम्ब उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरु**

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। किसी भी व्यवसाय को शुरु करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरुरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। यह बात सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरु करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरुरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की। खुम्ब के पोषक तत्वों से कराया अवगत इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरुम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरुम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरुम से होने वाले लाभ और मशरुम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरुम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**27.11.2020**	——	--

किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. ए.के. गोदारा

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

खुम्ब के पोषक तत्वों से कराया अवगत

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	**27.11.2020**	——	--

किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. ए.के. गोदारा

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

खुम्ब के पोषक तत्वों से कराया अवगत : इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**27.11.2020**	——	--

हकृवि में खुम्ब उत्पादन तकनीक पर 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

हिसार, (सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर वीरवार को शुरू हुआ। इस मौके पर सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह- निदेशक डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**26.11.2020**	——	--

किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. गोदारा

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

पांच बजे न्यूज

हिसार। किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय के शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

खुम्ब के पोषक तत्वों से कराया अवगत

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**26.11.2020**	——	--

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। वे हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

खुम्ब के पोषक तत्वों से कराया अवगत

प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**26.11.2020**	——	--

व्यवसाय करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी : गोदारा

हिसार. किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 4-8

इसी महीने के अंत में सीएम पहुंचेंगे एचएयू, विवि सिंथेटिक ट्रैक के उद्घाटन की तैयारियों में जुटा

इंग्लैंड के इंजीनियरों की मदद से तैयार किया रेसलिंग ट्रैक, इंडोर स्टेडियम और बॉक्सिंग हॉल

भास्कर न्यूज | हिसार

प्रदेश के खिलाड़ियों के लिए खुशखबरी है। अब वे हिसार के चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्व विद्यालय में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचने की तैयारी कर सकेंगे। करीब एक से दो साल की कड़ी मेहनत के बाद इंग्लैंड के इंजीनियरों की मदद से सिंथेटिक तकनीक से रेसलिंग ट्रैक, इंडोर स्टेडियम और बॉक्सिंग हाल का निर्माण कार्य पूरा कर दिया गया है। जिसका उद्घाटन इसी माह के अंत में प्रदेश के सीएम मनोहर लाल खट्टर और खेल मंत्री करेंगे। विवि प्रशासन की सीएम ओर से अन्य अधिकारियों से भी बात फाइनल हो चुकी है। हालांकि अभी उद्घाटन कार्यक्रम की तारीख निर्धारित करनी है। एचएयू प्रशासन ने उद्घाटन समारोह को लेकर सभी तैयारियों को अंतिम रुप देना भी शुरू कर दिया है।

दरअसल, करीब एक साल पहले एचएयू में सिंथेटिक तकनीक से बना रेसलिंग ट्रैक, स्पोर्टस अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा तैयार इंडोर स्टेडियम और जिंदल स्टील द्वारा नर्माण कार्य चल रहा था। हालांकि कोरोना के चलते यहां पर खिलाड़ी प्रैक्टिस नहीं कर पा रहे थे। यहीं नहीं निर्माण कार्य भी रुक गया था। एचएयू सूत्रों के अनुसार सभी प्रोजेक्ट का काम पूरा किया जा चुका है। प्राजेक्ट का उद्घाटन करने के लिए नवंबर माह के अंत में सीएम खुद एचएयू पहुंचेंगे।

हिसार के एचएयू स्थित सिंथेटिक तकनीक से तैयार ट्रैक।

जानिए... क्या है सिंथेटिक ट्रैक की खासियत

एचएयू स्थित गिरी सेंटर में 400 मीटर का अंतरराष्ट्रीय स्तर का रेसलिंग ट्रैक बनाया गया है। 400 मीटर के रेसिंग ट्रैक को कुछ इस तरह से बनाया गया है कि यहां पर अंतरराष्ट्रीय स्तर की 1500 मीटर तक की दौड़ प्रतियोगिताएं भी आसानी से हो सकती हैं। इसकी गुणवत्ता ए-वन श्रेणी की रखी गई है। यह श्रेणी अंतरराष्ट्रीय खेलों में ट्रैक के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। खिलाड़ियों के प्रदर्शन में निखार आए, इसके लिए ट्रैक के निर्माण में रबड़ के दानों और केमिकल के एक विशेष सोल्यूशन का प्रयोग किया है।

जानिए... इंडोर खेल स्टेडियम की खासियत

रेसिंग ट्रैक के पास ही भारत सरकार के स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया की मदद से इंडोर स्टेडियम तैयार किया है। अंदर खिलाड़ी एक साथ कई तरह के खेल खेल सकेंगे। यह भी पूरी तरह से अत्याधुनिक बनाया है। साथ ही बॉक्सिंग हॉल को भी अत्याधुनिक तरीके से बनाया है। शौचालय भी बनाया गया है।

सीएम करेंगे उद्घाटनः वीसी

नव निर्मित रेसलिंग ट्रैक और बाक्सिंग हॉल का उद्घाटन सीएम मनोहर लाल खट्टर करेंगे। इसके लिए उनसे बात भी हो चुकी है। हालांकि अभी उनके आने की तारीख निर्धारित की जानी है। इस माह के अंत में हर हाल में उद्घाटन करा दिया जाएगा। इसके अलावा खेल मंत्री, डिप्टी स्पीकर रणवीर गंगवा, विधायक कमल गुप्ता आदि भी उद्घाटन समारोह में शामिल होंगे।'' - **प्रोफेसर समर सिंह,** वीसी, हरियाणा एग्रीकल्चर यूनीवर्सिटी।